International Journal of Applied Research 2015; 1(6): 40-42

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(6): 40-42
www.allresearchjournal.com
Received: 09-04-2015
Accepted: 28-04-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिंदी विभाग सहायक प्राध्यापक रा. महा. वि. ढलियारा **(**कांगड़ा**)** हि. प्र.

Correspondence:
डॉ. शिवदत्त शर्मा
अध्यक्ष हिंदी विभाग सहायक प्राध्यापक रा. महा. वि. ढलियारा **(**कांगड़ा**)** हि. प्र

श्रीमदभागवत् दर्शन और संत रविदास वाणी

डॉ. शिवदत्त शर्मा

इतिहास साक्षी है कि वैदिक साहित्य ज्ञान एवं दर्शन का मूल स्त्रोत है । वैदिक साहित्य से जो ज्ञान एवं दर्शन निसृत हुआ वही धीरे–धीरे किसी और सांचे में ढलकर परवर्ती काल में विभिन्न माध्यमों से व्यक्त हुआ है । वैदिक साहित्य की जटिलता कदाचित् अधिक अस्पष्टता के कारण उपनिषदों, पुराणों,की रचना हुई ।

पौराणिक दर्शन अपनी रोचक कथाओं के कारण अत्यधिक लोक–प्रिय रहा, कल्पना की अधिक उड़ान के कारण पुराण अधिक देर तक अपनी लोकप्रियता के स्तर को बनाए न रख सका,फिर इतना तो अवश्य है कि भक्ति की प्रतिष्ठा में पौराणिक दर्शन का योगदान बहुत अधिक है । अठारह पुराणों में श्रीमद्भागवत् पुराण सर्वोपरि एवं लब्ध–प्रतिष्ठित ग्रंथ साबित हुआ, वस्तुतःपुराणों का सार भागवत् पुराण माना जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । पौराणिक दर्शन में श्रीमद्भागवत् परवर्ती काल में भक्ति के क्षेत्र में सन्दर्भ ग्रन्थ प्रमाणित हुआ । एक तरफ से भगवान को श्रद्धा की पराकाष्ठा पर स्थापित करने का महत्वपूर्ण कार्य पौराणिक दर्शन द्वारा हुआ, जिसको आधार मानकर भक्त आखें मूंदकर भक्ति की भाव–लहरी में प्रभु में ही आत्म–सात हो जाने को आतुर रहता है । संत रविदास यद्यपि कोई वेदान्तवादी अथवा पुराणवादी संत नहीं हैं परन्तु इतना तो अवश्य है कि उनकी वाणी में पौराणिक सन्दर्भों की बहुतायत देखकर कोई भी बुद्धिजीवी उन्हें महान् समन्वयवादी संत अवश्य कह सकता है । उनकी वाणी में भक्ति परक पद संत रविदास को सूर–सदृश भक्त रविदास की आकृति उभारते भासित होते हैं । पौराणिक साहित्य के सन्दर्भों को जिस स्नेह एवं अधिकार से संत रविदास जी ने प्रयुक्त किया है उतना अधिक सम्भवतः किसी संत ने अन्यत्र नहीं किया ।

संत सम्प्रदाय वैदिक साहित्य का मुक्त प्रशंसक नहीं है, फिर भी स्थान–स्थान पर संत साहित्य में वैदिक दर्शन के ही मूल सिद्धान्तों का प्रयोग अपने–अपने ढ़ग से किया अवश्य मिलता है । संत कबीर आदि अन्य संतों की तुलना में सौम्य प्रकृति के संत रविदास की विचारधारा अधिक लचीली एवं विराट है । एक ओर संत रविदास सगुण या निर्गुण के कट्टर समर्थक नहीं हैं ,[1] वहीं उन्हें वाणी में अपने पक्ष को सदृढ़ करने के लिए पौरांणिक सन्दर्भों को ग्रहण करने में आपत्ति नहीं है उन्होने सम्पूर्ण वाणी में कहीं भी पौराणिक दर्शन का स्पष्ट विरोध नहीं किया, अपितु पौराणिक महत्व को प्रतिपादित अवष्य किया है ।[2] फिर भी इसका यह अभिप्राय नहीं कि संत रविदास पुराणवादी अथवा वेदान्तवादी थे, वास्तव में अभिप्राय यह है कि संत रविदास जी ने उन सभी ग्रंथों,धार्मिक सिद्धान्तों को स्वीकार किया है जो मानव–मात्र के लिए ठीक मार्ग प्रशस्त करते हों । वे किसी एक सम्प्रदाय दर्शन, अथवा मत के समर्थक नहीं थे, उनके लिए वे सभी धर्म,दर्शन पूज्य एवं स्वीकार्य थे जो प्रभु के प्रति समपर्ण की भावना को जागृत करते हैं । यही कारण है कि कई पदों में पौराणिक सन्दर्भ सायास अथवा अनायास ही सम्पृक्त हो गए । सम्भव है कि पौराणिक कथाओं का श्रोत्र पान गुरू रामानन्द अथवा किसी और भक्त द्वारा संत रविदास ने किया हो अन्यथा ऐसे गंभीर सन्दर्भों का ज्ञान होना आष्चर्य अवश्य कहा जाएगा ।

संत रविदास मूलतः भक्त प्रतीत होते हैं ।[3] संत रविदास वाणी का प्रायःप्रत्येक पद भक्ति रस से सरावोर है । भक्ति पद्धति के प्रायःसभी रूप उनकी वाणी में स्पष्ट देखे जा सकते हैं । संत रविदास जी ने भी अपनी भक्ति पद्धति को एक तरह से श्रीमद्भागवत् से ही सम्पृक्त किया है । भक्ति का आधार श्रीमद्भागवत पुराण को मानकर एक तरह से अपरोक्ष रूप से भागवत् पुराण की महिमा का प्रतिपादन ही किया है ।[4] इस तरह उपकी वाणी में उद्धृत सन्दर्भों को पौराणिक दर्शन के परिप्रेक्ष्य में देखना युक्तिसंगत लगता है ।

श्रीमद्भागवत् पुराण वस्तुतः अधिकतर संत रविदास वाणी में उद्धृत सन्दर्भों का मुख्य आधार है। इसके अतिरिक्त उनकी भक्ति साधना का भी बहुत अधिक साम्य श्रीमद्भागवत् में प्रतिपादित भक्ति से दिखाई देता है ।

श्रीमद्भागवत् के चतुर्थ स्कन्द में अध्याय आठ से बारह तक ध्रुवोपाख्यान का बहुत सुन्दर वर्णन है जहां बालक ध्रुव को भक्ति की पराकाष्ठा में पहुॅचने के कारण गोद में बिठाने और अनन्तर अटल पद प्रदान

करने का उल्लेख है ।[5] संत रविदास जी ने उसी प्रसंग को भक्ति हेतु पथ भ्रष्ट लोगों को आकर्षित करने हेतु वाणी में सम्मलित किया है । भक्त प्रहलाद के प्रसंग को भी इसी के साथ उद्धृत करके संत गुरूरविदास जी ने भक्ति की महिमा को सुप्रतिष्ठित करने का स्तुत्य प्रयास किया है ।[6]

श्रीमद्भागवत् के ही आठवें स्कन्द में गजेन्द्र मोक्षक नामक उपाख्यान है जिसमें जल पानार्थ सरोवर पर गए गजेन्द्र को मगरमच्छ द्वारा पैर से पकड़ लेने की रोंचक कथा का सुन्दर वर्णन है । गजेन्द्र द्वारा छटपटाने के उपरान्त वेवस होकर अन्तर्मन से भगवान विष्णु को पुकारने के कारण प्रभु द्वारा वहां उपस्थित होकर गजेन्द्र को मगरमच्छ से छुड़वाने का उल्लेख भागवत् पुराण में मिलता है ।[7]

संत रविदास जी ने भी वाणी में पद 142 में इसी सन्दर्भ में उल्लेख किया है, भगवान तो भक्त वत्सल हैं यह बड़े सुन्दर ढंग से प्रतिपादित किया गया है ।[8]

इसी तरह महर्षि कपिल से हंसी–मजाक करने के कारण श्रापवश यदु वंश के नष्ट होने का वर्णन श्रीमद्भागवत् पुराण में ही तीसरे स्कन्द में मिलता है, कंस वध का भी उल्लेख इसी ग्रंथ में आता है। रविदास वाणी में उन सन्दर्भो का उल्लेख हुआ है ।[9]

राजा नहुश द्वारा अहंकार वश सप्त ऋषियों को रथ में जोतने के कारण राजा नहुश को सर्प योनि प्राप्त होने की आश्चर्य जनक कथा का उल्लेख पुराणों में ही आता है । यह सन्दर्भ संत रविदास वाणी में उद्धृत है ।[10]

इसी तरह श्री कृष्ण भगवान द्वारा बालसखों को पानी में डुबोकर पुनः बिना किसी आश्रय से पार किनारे पर उतारने का उल्लेख श्रीमद्भागवत् के चतुर्थ स्कन्द में है, संत रविदास जी ने भक्ति की महिमा और भगवान के अप्रतिहत शौर्य एवं शक्ति को प्रतिपादित करते हुए अपनी वाणी में इन अद्भुत सन्दर्भों का बहुत सुन्दर उल्लेख किया है ।[11]

इसके अतिरिक्त संत रविदास वाणी में अन्यत्र भी अनेक पौराणिक सन्दर्भ आए हैं संत रविदास जी के प्रभु भीलनी के बेर भक्षण करने वाले हैं ।[12] खम्भे को फाड़कर प्रहलाद की रक्षा करने वाले है । गणिका,शर्बरी,जटायु गीध,अजामिल, सदना पर कृपा करके उन्हें तारने वाले हैं ।[13] ये तभी उदाहरण किसी न किसी पुराण से ही मूलतः उद्धृत हैं ।

श्रीमद्भागवत् मूलतः भक्ति परक ग्रन्थ है, भक्ति की महिमा को प्रतिपादित करना ही इसका मूल आधार है भक्ति का ज्ञान से अधिक महत्व इस ग्रंथ में प्रतिपादित है संत रविदास वाणी में भी ज्ञान से भक्ति को अधिक महत्व दिया गया है ।

श्रीमद्भागवत् पुराण में भी भक्ति के बिना ज्ञान का अभ्यास करना भूसा कूटने के समान प्रतिपादित किया गया है ।[14] संत रविदास वाणी में भी भागवत् पुराण की तरह नवधा एवं दशधा भक्ति का अनुसरण किया गया है । संत रविदास जी ने सच्चे भक्त की तरह भागवत् पुराण सहित सभी पुराणों के महत्व को स्वीकार करते हुए भक्ति की श्रेष्ठता को प्रतिपादित किया है । उन्होंने स्पष्ट कहा है कि भक्ति का स्त्रोत श्रीमद्भागवत् पुराण है ।[15]

भक्ति की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए भागवत्पुराण में उल्लेख मिलता है कि कलयुग में भक्ति ही केवल प्रभु अराधना का आधार होगी ।[15] संत गुरू रविदास जी भी इस कथन से सहमत हैं, उन्होंने भी भागवत् पुराण के इस कथन का अनुसरण किया है वे कहते हैं कि –

संत जुगि संत त्रेता जुगि, दुआपरि पूजाचार।
तीनों जुग तीनों द्रिढ़े,कलि केवल नाम आधार ।।

नारद भक्ति सूत्र भागवत दर्शन के समान भक्ति तत्व का महत्वपूर्ण ग्रंथ है । जहां उल्लेख है कि भक्ति की चरमावस्था में पहुंचकर भक्त की सम्पूर्ण ज्ञानेद्रियां उसी ब्रह्म में लीन हो जाती हैं तब भक्त केवल उसी को देखता, उसी को सुनता उसी को कहता एवं उसी का चिन्तन करता है। [16]

श्रीमद्भागवत् पुराण में भी बिल्कुल ऐसा ही वर्णन किया गया है–

सा वाग् यदा तस्य गुणान गृहीते,
करो च तत्कर्म करो मनश्च।
स्मरेद वसन्तं स्थिर जंगमेषु,
श्रृणोति तत्तपुण्य कथा सः कर्णः।।

संत रविदास जी का भी एक पद इस सन्दर्भ में द्रष्टव्य है, वे कहते है कि मैं मन से उस प्रभु का स्मरण करूं, आखों से केवल उसी को ही देखूँ , कानों से केवल उसी की ही वाणी सुनुं मन मधुकर को उसी के चरणों में लगा दूँ तथा जिह्वा से उसी प्रभु के नाम रूपी अमृत का उच्चारण करूं ।

यहां उनका वर्णन अक्षरशः भागवत पुराण के बिल्कुल अनुरूप प्रतीत होता है ।

श्रीमद्भागवत् पुराण में ही भक्ति एवं भक्त का विशद वर्णन करते हुए उल्लेख है कि तुच्छ भक्त भी प्रभु को परम प्रिय होता है,वह भक्त जिसकी जिह्वा पर सदैव प्रभु का नाम रहता है वह तुच्छ होने पर भी सर्वथा प्रभु के प्रिय होता है ।

नारद पुराण में भी चाण्डाल को भी जो प्रभु का अनन्य भक्त है ब्राहमण से भी अधिक श्रेष्ठ एवं पूज्य कहा गया है । वहां उल्लेख है कि ईश्वर के प्रति ऐकातिक भक्ति द्वारा चांडाल भी ब्राहमण से श्रेष्ठतर है तथा ईश्वर भक्ति विहीन ब्राहमण भी अधर्मी चाण्डाल ही है ।

संत रविदास जी के दर्शन के अनुसार भी वह भक्त चांडाल होकर सर्वश्रेष्ठ है जो हरि चरणों में अपने चित्त को लगाए रहता है ।[17] वस्तुतः यहां भक्त एवं भक्ति की महिमा को प्रतिपादित करते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि संत रविदास वाणी में भक्ति तत्व एक भक्त द्वारा प्रतिपादित हुआ है । यहां बहुत सीमा तक संत रविदास भक्त सदृश दिखाई देते हैं यद्यपि वे संत कबीर के समकालीन संत हैं ।निश्चित रूप से अन्य संतों की तुलना में संत रविदास में भक्तित्व का स्वरूप अधिक निखरा हुआ एवं निरीह है, स्वाभाविक है।

रविदास वाणी का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने पर वह प्रतीत होता है कि संत रविदास ने पूर्ववर्ती भिन्न–भिन्न दर्शनों का समाहार करते हुए नवनीत के समान सीधे सपाट शब्दों में अपनी सरल वाणी के माध्यम से निगूढ़तम गुत्थियों को सुलझाने का स्तुत्य प्रयास किया है । एतदर्थ उन्हें मौखिक रूप से धरोहर के रूप में रामानन्द आदि पूर्ववर्ती दार्शनिकों से जो कुछ प्राप्त हुआ, उनका भी स्थान–स्थान पर समावेश करके वाणी को अलंकृत किया है । यही कारण है कि वाणी में कई जगह वेदान्त की दुर्गम बात को सरलतम रूप से प्रकट किया है या कहीं पौराणिक उद्धरणों से अपने वक्तव्य को और पुष्ट किया है । पौराणिक दर्शन विशेषतः भागवत् पुराण उनके लिए भक्ति के क्षेत्र में आदर्श ग्रंथ प्रतीत होता है, जहां एक ओर भागवत् पुराण से कई उद्धरण उन्होंने वाणी में उतारे हैं वहीं भक्ति का आधार ही भागवत् दर्शन को मानकर एक तरह से भक्ति के स्त्रोत उसे ही स्वीकार किया है ।

अन्य संतों की वाणी में भी जहां कहीं पौराणिक उद्धरण मिलते हैं परन्तु संत रविदास वाणी में इनका आधिक्य ही है । इसके अतिरिक्त भक्ति का आधार भागवत् को मानकर स्पष्ट कर दिया गया है कि बिना किसी पूर्वग्रह से पुराण और भक्ति परस्पर सम्पृक्त हैं । भक्ति की चरमावस्था में पहुंचकर रविदास भक्ति के बिना सब निष्फल समझते हैं वह भक्ति भावना की शीतल लहरी भागवत् पुराण को आदर्श मानकर ही चलने वाली है । संत रविदास वाणी में इसके अतिरिक्त नवधा अथवा दशधा भक्ति के पूर्ण उदाहरण देखकर उनकी पौराणिक आस्था का स्पष्ट उल्लेख स्वयं ही हो जाता है ।

मेरा उद्देश्य संत रविदास जी को पुराणवादी सिद्ध करना नहीं है, परन्तु इतना अवश्य है कि संत रविदास अन्य संतों की तरह वैदिक साहित्य के प्रति संकुचित दृष्टिकोण से मुक्त हैं । उन्हें जहां भी अच्छा लगा उसे अपनी वाणी में पिरो लिया वह तो केवल सार–सार को ग्रहण करने वाले संत हैं । उन्हें न किसी दर्शन विशेष से लगाव है न दुराव , वे तो केवल हर अच्छी बात के ग्राहक हैं चाहे वह किसी धर्म,दर्शन अथवा सम्प्रदाय से क्यों न मिले । इस दृष्टिकोण से संत रविदास संत भी हैं चाहे वह किसी धर्म, दर्शन अथवा सम्प्रदाय से क्यों न मिले । इस दृष्टिकोण से संत रविदास संत भी हैं भक्त भी, उन्हें जो जिस दृष्टि से देखना चाहे देख सकता है । अगर कबीर क्रान्तिकारी संत थे तो सौम्य संत रविदास समन्वयवादी,युग द्रष्टा दार्षनिक थे इसमें दो मत नहीं ।

सन्दर्भ सूची

1. अगुन स्त्रगुन दौ समकरि जान्यो,चहु दिस दरसन तोरा। संत र.वा., पद 73,
2. वेद ते पुरान पुरान ते भागवत्,भागवत् ते भक्ति प्रकट कीन्हीं ।संत र.वा., पद 134,
3. तथा नव प्रसेद जा के सुर सरी धारा, रोमावली अठारह भारा ।
4. चारों वेद जाके सुम्रिति स्वांसा, भगति हेत गावै रैदासा ।।संत र.वा., पद 161,
5. भगति हेत गावै रविदासा। र.वा., पद 161 ,
6. वेद ते पुरान, पुरान ते भागवत्,भागवत् ते भक्ति प्रकट कीन्हीं। संत र.वा.,पद 134,
7. वारक ध्रुव कूं अंक राखि हरि, थंभ फारि प्रहलाद उवारत । र. वा.,पद 168,
8. उत्क्षिप्य साम्बुजकरं गिरमाह–नारायणखिल गुरो भगवन्नमस्ते 8–3–4,32,
9. गज कूं फंद छुड़ायो छिन महं, राम नाम इकु वार उचारे ।
10. जन रविदास प्रभु सरनाई, उनमनि रह राम उर धारे ।। र.वा. ,पद 142,
11. कियो ठिठोली जादव कपिल सों,मन मंह कपट रचाया ।
12. करि चिंता साधु हारे उनकी,आघहु कसं नसाया ।।
13. बहुले जगि करै नहू राजा,मन मंह भई बड़ाई ।
14. करि हंकार सत्त ऋषि रथ जोये, जोनि सरपहु पाई ।। र.वा. ,पद 174,
15. प्रहलाद भगति कूं छिनि छिनि निवेड़े सकल काज।
16. जो जन उधौ। मोहि न विसारै हौं न विसारौं आध घरी ।
17. जइसे अड़े पड़इ भारथ मंह, ले गज घंट उतार धरी ।। र.वा. ,पद 128,
18. सवरी गीध अजामिल सदना, राम किपा गनक तरि जावत ।
19. कवन कवन पापी जन तरिओ,कहि रविदास गनइ नहिं आवत ।।र.वा.,पद 163,
20. न अन्यद् यथा स्थूल तुवावधातिनाम्–भागवत पुराण 10–14–4
21. वेद ते पुरान, पुरान ते भागवत, भागवत ते भक्ति प्रकट कीन्हीं।र.वा.,पद 134,
22. कृते ध्यायतो विष्णुः,त्रेतायां यजतां मघं ।
23. द्वापरे परिचर्यायां, कलौ तत् हरि कीर्तनम् ।।–भागवत पुराण
24. तत्प्राप्य तदेवालोकयति तदेव श्रृणोति तदेव भासते तदेव चिन्तयति ना.भ. सूत्र 55,
25. ता थैं भलौ स्वान को शत्रु, हरि चरणां चित्त लाया रे र.वा.,पद 63,